पहले कदम

अंकिता कोडवूर

मैंने विद्या निकेतन स्कूल के फाटक की ओर देखा जो मुझे अपने भीतर आने का निमन्त्रण दे रहा था। मैंने धीरे–धीरे उस ओर कदम बढ़ाए, यह सोचते हुए कि जीवन का यह मुकाम मेरे लिए जाने क्या लेकर आने वाला है। तभी एक हँसमुख लड़की ने मुस्कुराकर मुझसे हाथ मिलाया और "गुड मॉर्निंग" कहकर मेरा अभिवादन किया। वह हर विद्यार्थी का इसी उत्साह के साथ अभिवादन कर रही थी। मुझे इस बात से आश्चर्यजनक प्रसन्नता हुई और पता चला कि यह तो विद्या निकेतन की परम्परा थी।

हालाँकि मैं इस स्कूल में नई थी पर मुझे महसूस हुआ कि मानो स्कूल की हल्की पीली दीवारों से लेकर लोगों को मुस्कुराकर स्वीकार करने की प्रक्रिया में एक प्यार भरी गर्माहट व्याप्त थी। स्कूल के कोने–कोने से आशा की चमक झलक रही थी; मुझे लगा कि अपनी स्कूली शिक्षा के अन्तिम वर्ष बिताने के लिए ऐसा वातावरण अत्यन्त आदर्श था।

यहाँ अनुशासन को बहुत महत्त्व दिया जाता है लेकिन इसके लिए विद्यार्थियों में निहित सम्भावनाओं को न तो अवरुद्ध किया जाता है और न ही दबाया जाता है। यह एक ऐसा स्थान है जहाँ विचारों की स्वतन्त्रता है लेकिन वे नियन्त्रण की सीमा के बाहर नहीं हैं। एक नई बात और भी थी–कक्षा में स्मार्टबोर्ड्स का उपयोग जिनकी सहायता से कक्षा में व्यापक गतिविधियाँ करवाने का अवसर मिलता है। वैसे तो अधिकतर लोग यह मानते हैं कि पाठ्यपुस्तकों से पढ़ाना चाहिए लेकिन अगर हम उनके परे न जाएँ तो हम एक बेहद मामूली और प्रतिबन्धों से घिरी हुई दुनिया में फँसकर रह जाएँगे। हमारे शिक्षकों की खुले दिमाग वाली प्रकृति बहुत प्रेरणाप्रद है और इसकी वजह से अक्सर कक्षा में एक स्वस्थ चर्चा को प्रोत्साहन मिलता है। कक्षा में विद्यार्थियों की संख्या कम होने के कारण पूरी कक्षा को चर्चाओं में भाग लेने का मौका मिलता है। यहाँ पर मैं उसी पुरानी बात को दोहराना चाहूँगी कि "सिर्फ काम करते रहने और जरा भी न खेलने से जैक एक सुस्त लड़का बनेगा।"

विद्या निकेतन में अकादमिक और अन्य विषयों को समान स्थान दिया जाता है। चूँकि यहाँ खेल सम्बन्धी गतिविधियों, अन्तर–स्कूल कार्यक्रमों और मॉडल UN (MUN) तथा वाद–विवाद आदि का आयोजन होता ही रहता है इसलिए मैं यह कह सकती हूँ कि हम यहाँ "सुस्त" बन ही नहीं पाते। अगर हम अपने पुस्तकीय ज्ञान को जीवन में लागू न कर पाएँ तो हमारा सीखना बेकार है। बढ़ने और सीखने की जटिलता के साथ–साथ जवाबदेही की जिम्मेदारी भी आती है। स्कूल में विभिन्न उत्सवों, कार्यक्रमों और MUN के आयोजन की जिम्मेदारी हमें दी जाती है। इनसे हमें अपना आत्मविश्वास बढ़ाने का अवसर मिलता है। इस तरह के आयोजन करने से हमारी रचनात्मकता और नेतृत्व के गुण सामने आते हैं।

हमारा स्कूली जीवन पढ़ाई और अन्य बातों के साथ–साथ हमारे साथियों और शिक्षकों के चारों ओर भी केन्द्रित रहता है। हमें इस बात से बहुत राहत मिलती है कि यहाँ के

शिक्षकों के साथ हम अपने सुख–दुख बाँट सकते हैं, ये शिक्षक हमारी परवाह करते हैं और हम उनके पास जब चाहें तब आसानी से जा सकते हैं। अकसर हम अपनी मानसिक उलझनों के कारण यह भूल जाते हैं कि हम अपने साथियों के साथ कैसा व्यवहार कर रहे हैं। विद्या निकेतन में साझा करने का विचार बेहद गहराई के साथ निहित है। हम अपनी साप्ताहिक कक्षाओं में अपने विचार साझा करते हैं। इन सत्रों में हमारे काफी मानसिक संकोच या अवरोध दूर हो जाते हैं और पूरी कक्षा एक दूसरे की बात सुनती है। हमारे जीवन–कौशल वाले शिक्षक हमें ऐसा हर मौका देते हैं जिसमें हमें जीवन के किसी नए पहलू के बारे में गहन रूप से सोच–विचार करने को मिले। जीवन के संवेदनशील मुद्दों, जैसे कि दूसरों को डराना–धमकाना, आदि को जिस तरीके से और तुरन्त ही निपटाया जाता है; वह मुझे बहुत अच्छा लगता है।

स्कूल एक ऐसा स्थान है जहाँ हम सीखते हैं; फलते–फूलते हैं। हम अपने आने वाले वयस्क जीवन (जो कि जल्द ही आ जाता है) में जैसा बनने वाले होते हैं, स्कूली जीवन हमें उस साँचे में ढालता है। John Ciardi के अनुसार, "कक्षा दुनिया में प्रवेश करने का द्वार होना चाहिए न कि उससे पलायन का", और मैं इस बात से पूर्णतः सहमत हूँ।

अंकिता कोडवूर विद्या निकेतन स्कूल, बेंगलूरु की छात्रा हैं। उनसे anki.kodavoor@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद** : नलिनी रावल